REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 6 | MARCH - 2021

पुलिस सिपाहियों के स्वास्थ्य जागरूकता का अध्ययन

अधीर कुमार घोडेश्वर
राजा भोज शासकीय महाविद्यालय कटंगी जिला–बालाघाट (म.प्र.) भारत .

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में पुलिस सिपाहियों के स्वास्थ्य जागरूकता का अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु अमरावती शहर के कुल 60 पुलिस सिपाहियों का यादृक्षिक विधि से चयन किया गया। आंकडो का संकलन अजय त्यागी द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, इस प्रश्नावली में Personal Health Status एवं Personal Health Care (उच्च रक्त चाप, कोलेस्टॉल एवं मधुमेह) का अध्ययन किया गया। प्राप्त आंकड़ो का विशलेषण करने हेतु प्रतिशतता का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ो के विशलेषण दर्शाता है, कि अधिकतर (76%) पुलिस सिपाही उच्च रक्तचाप के प्रति जागरूक पाये गये, कोलेस्टॉल के प्रति (63%) एवं मधुमेह के प्रति (65%) पुलिस सिपाही जागरूक पाये गये। अतः निषकर्ष निकाला जा सकता है, कि अमरावती शहर के पुलिस कर्मचारी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक पाये गये।

कठिन शब्द : उच्च रक्तदाब, कोलेस्टॉल, मधुमेह, स्वास्थ्य, पुलिस सिपाही

प्रस्तावना

प्रजातंत्र को सफल बनाने के लिए उत्तम स्वास्थ्य वाले शक्तिशाली नागरिको का होना अनिवार्य है। अस्वस्थ शरोर मनुष्य के हर कार्य क्षेत्र में बाधा पैदा करता है। आधुनिक युग में, वैज्ञानिक, तकनीक तथा औद्योगिक प्रगति के कारण जीवन में व्यवस्थता तथा जटिलता बढ़ती जारी है। आज का मानव समय भाव के कारण स्वास्थ्य के प्रति उदासीन होता जा रहा है। स्वास्थ्य मनुष्य समाज की रीढ़ की हड्डी समझा जाता है। हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है कि हमारा शारीरिक वजन उचित होना चाहिए। शरीर के वजन की उचितता का निर्धारण विभिन्न कारणों के आधार पर होता है जिनमें मुख्य कारक है लम्बाई, आकार, आयु तथा लिंग। वजन का सिामान्य होना उत्तम स्वास्थ्य का प्रतीक है तथा वजन का सामान्य से अधिक होना मोटापा कहलाता है। अतः स्वास्थ्य विज्ञान की मान्यता है उत्तम स्वास्थ्य के लिए वजन को नियंत्रित रखना चाहिए। पुलिस एक सुरक्षा बल होता है। जिसका उपयोग किसी भी देश की अन्दरूनी नागरिक सुरक्षा के लिये ठिक उसी तरह से किया जाता है, जिस प्रकार किसी देश की बाहरी अनैतिक गतिविधियों से रक्षा के लिये सेना का उपयोग किया जात है। पुलिस के मुख्यतः कार्य अपराध निरोध एवं अपराधों का विवेचन करना, यातायात नियंत्रण करना, राजनितीक सूचनाओं का एकत्रिकरण था राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण व्यक्तिया की सुरक्षा करना। सुरक्षा विभाग के अंतर्गत आने वाला विभाग होन से देश की कानून व्यवस्था को संभालने का काम

पुलिस के हाथ ही होता है। आपराधिक गतिविधियों को रोकने, अपराधियों को पकड़ने, अपराधियों के द्वारा किये जानेवाले अपराधों की खेजबीन करने, देश की आंतरिक सम्पत्ति की रक्षा करने और जो अपराधी है और उनका अपराध साबित करने के लिए पर्याप्त साक्ष जुटाना ही पुलिस का कार्य है। अपराधी घोषित करने के बाद पुलिस संबन्धित व्यक्ति को अदालत को सौंपती है। यह न्यायव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कडी के रूप में काम करती है, लेकिन किसी अपराधी को सजा देना पुलीस का काम नही होता है, सजा देने के लिए अदालतों को पुलिस द्वारा अपराधी के खिलाफ जुटाये गये पुख्ता सबूत और जानकारी पर निर्भर रहना होता है साथ ही इसी जानकारी और सबूतों के आधार पर ही किसी व्यक्ति को अपराधो घोषित किया जा सकता है। विद्रोह एवं उपद्रवी तत्वों के दमन के निमित्त अनेक अवसरों पर पुलिस को अश्रुवाहक गैस, लाठी अथवा आग्नेय आयुधों का प्रयोग करना पड़ता है। हमारे देश में प्रादेशिक पुलिस का एक अंग, जिसे आर्म पुलिस, प्राविंशिल आर्म कांस्टेबुलरी, स्पेशल आर्म फोरस आदि नाम विभिन्न प्रदेशों मे दिए गए हैं, विशेष आशंकाजनक स्थितियों में मुख्यतः उपद्रवों के दमन के लिए प्रयुक्त होता है। सामान्य प्रशासन अथवा अपराधों की रोकथाम थानों पर नियुक्त सिविल पुलिस द्वारा की जाती है। अनुसन्धनकर्ता द्वारा अमरावती शहर के पुलिस सिपाहियों का स्वास्थ्य जागरूकता का अध्ययन करना। पुलीस सिपाहियों के स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक तथा नकारात्म्क मनोवृत्ति की खोज करना। पुलिस सिपाहियों को स्पास्थ्य संतुलित रखने के लिए योग्य मार्गदर्शन करना। इससे प्राप्त होने वाले परिणामों से पुलीस सिपाही अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान दे सकेगी। इस अध्ययन के द्वारा पुलीस सिपाहियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता निर्माण होगी। अनुसांधानकर्ता द्वारा यह परिकल्पना की जाती है कि अमरावती शहर के पुलिस सिपाहियों का स्वास्थ्य जागरूकता का स्तर कम पाया जा सकता है। यह अध्ययन केवल अमरावती शहर के पुलिस सिपाही वर्ग पर ही किया गया। अध्ययन के लिए विषयों की संख्या 60 थी। यह अध्ययन महिला एवं पुरूष पुलिस सिपाहियों पर हि किया गया। पुलिस सिपाहियों की आयु 25–40 वर्ष रखी गई थी। विषयों के आहार पर कोई नियंत्रण नही रखा गया। विषयों के दैनिक क्रियाकलापो पर कोई ध्यान नही दिया गया। विषयों के आर्थिक–सामाजिक स्तर को ध्यान में नही रखा गया।

विधि

अनुसंधानकर्ता को सफल बनाने के लिए कार्यपद्धति का प्रारूप होना आवश्क होता है। इसमें समस्या के अध्ययन से संबंधित कार्यपद्धति का वर्णन किया गया। जिसमें शोधकर्ता द्वारा किए जाने वाले कार्यों की संपूर्ण रूपरेखा होती है। कार्यपद्धति यह अनुसंधान कार्य का आधार होती है जिस पर नतीजे निकाले जाते है।

आंकडे प्राप्त करने के स्त्रोत

इस अनुसंधान के लिए अमरावती शहर के पुलिस सिपाहियो को ही विषय हेतु चयन किया गया।

विषयों का चयन

इस अनुसंधान के लिए 60 पुलिस सिपाहियों का चयन Simple Random Method द्वारा किया गया।

आंकड़ों के संकलन की विधि–

आंकड़े एकत्रित करने के लिए अजय त्यागी द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। जिसकी विश्वसनियता 0.95 है इस प्रश्नावली को दो भागों में विभाजित किया गया है Personal Health Status and Personal Health Care . एक भाग में वे अपने स्वास्थ्य कि तरफ कितना ध्यान देती है, इसका अध्ययन किया गया।

प्रश्नावली भरवाने के लिए अमरावती शहर के पुलिस सिपाहियों का चयन किया गया। साक्षात्कार पद्धति तथा अनुसंधानकर्ता स्वयं उनके साथ बैठकर प्रश्नावली भरवा ली गई।

आंकडों का प्रस्तुतीकरण एवं सांख्यिकिय विशलेषण इस अध्ययन क अंतर्गत आंकड़ो का संग्रह उनका सांख्यिकिय विशलेषण तथा मूल्यांकन किया जाता है, और निष्कर्षों की प्राप्ती की जाती है। जिसके आधार पर शोधकार्य की वैधता को प्रमाणिक रूप से सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है। इसमें सांख्यिकिय विधि के द्वारा तत्वों को विभिन्न आधारों पर प्रस्तुती करण करते है, तथा विश्लेषण कि प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है।

इस अनुसंधानकार्य में अनुसंधानकर्ता ने अमरावती शहर के पुलिस सिपाहिया का स्वास्थ्य जागरूकता के प्रति अध्ययन करने का प्रयास किया है। इस अनुसंधानकार्य के लिए शोधकर्ता ने अमरावती शहर के 60 पुलिस सिपाहियों का परीक्षण लिया। जिनके उपर स्वास्थ्य से संबंधी ज्ञान का परिक्षण लिया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण

प्रश्नावली को भरवाने के पश्चात उनके स्वास्थ्य से संबंधित प्रश्नों में से जागृत, अजागृत तथा उदासीनता में उत्तर प्राप्त हुए। इसमें प्रश्नों को दो भागों में बांटा गया था। जिसमें पहला उच्चरक्त दाब के बारें में तथा दूसरे भाग में मधुमेह और कोलस्ट्रॉल के बारे में था। प्रत्येक भाग में हॉ और नही में प्राप्त हुए उत्तरों की संख्या को अलग अलग सें जांच करके उनका प्रतिशत निकाला गया। जिसके आधार पर यह ज्ञात हुआ कि कितने प्रतिशत पुलिस सिपाही अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक है। इस का विविरण आगे दिए गये आलेख एवं सारणी में दिया गया है।

सारणी क्र.01
उच्चरक्त दाब के प्रति जागरूकता

	उत्तर दाते	प्रतिशत
जागरूक	46	76.66%
अजागरूक	14	24.34%
विषयों की संख्या	60	100%

सारणी क्रं. 01 से सह पता चलता है, कि उच्च रक्तदाब के प्रति पुलिस में कार्यरत् सिपाहीयों से 60 परिणाम प्राप्त हुए। ज्यादातर पुलिसकर्मी उच्च रक्त दाब के प्रति जागरूक थे। जैसे 76.66% जागृत तथा 24.34% अजागृत थे। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि अमरावती में कार्यरत् पुलिस कर्मचारी उच्च रक्त दाब के प्रति जागरूक है।

सारणी क्रं.–2
कोलेस्ट्रॉल के प्रति जागरूकता

	उत्तर दाते	प्रतिशत
जागरूक	38	63.33%
अजागरूक	22	36.67%
विषयों की संख्या	60	100%

सारणी क्रं. 02 से यह पता चलता है कि ज्यादातर पुलिसकर्मी कोलेस्ट्रॉल के प्रति जागरूक है। जैसे 63.33% जागरूक तथा 36.67% अजागरूक थे। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अमरावती में कार्यरत् पुलिस कर्मचारी कोलेस्ट्रॉल के प्रति जागरूक है।

सारणी क्रं.–3
मधुमेह के प्रति जागरूकता

	उत्तर दाते	प्रतिशत
जागरूक	39	65%
अजागरूक	21	35%
विषयों की संख्या	60	100%

सारणी क्रं. 03 से यह पता चलता है कि ज्यादातर पुलिसकर्मी मधुमेह के प्रति जागरूक है। जैसे 65% जागरूक तथा 35% अजागरूक थे। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अमरावती में कार्यरत् पुलिस कर्मचारी मधुमेह के प्रति जागरूक है।

परिकल्पना की जॉच

अनुसंधानकर्ता द्वारा यह परिकल्पना की गई थी कि अमरावती शहर के पुलिस सिपाहियों का स्वास्थ्य जागरूकता का स्तर कम पाया जा सकता है।

अतः उपरोक्त सारणीयों से यह ज्ञात होता है कि अमरावती शहर के पुलीस सिपाहियों का स्वास्थ्य जागरूकता का स्तर ज्यादा पाया है। अतः अनुसन्धनकर्ता द्वारा जो परिकल्पना कि थी वह स्विकृत नही की जाती है।

इस अनुसंधान के लिए अमरावती शहर के पुलिस सिपाहियों को ही विषय हेतु चयन किया गया। इस अनुसंधान के लिए 60 पुलिस सिपाहिओं का चयन Simple Random Method द्वारा किया गया। आंकडे एकत्रित करने के लिए अजय त्यागी द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। जिसकी विश्वसनियता 0.95 है इस प्रश्नावली को दो भागों ं विभाजित किया गया है Personal Health Status and Personal Health Care . एक भाग में उनके स्वास्थ्य कि तरफ कितना ध्यान देती है इसका अध्ययन किया गया। प्रश्नावली भरवाने के लिए अमरावती शहर के पुलिस सिपाहियों को चयन किया गया। साक्षात्कार पद्धति तथा अनुसंधानकर्ता स्वयं उनके साथ बैठकर प्रश्नावली भरवा कर लि गई। इस अनुसंधानकार्य ने अमरावती शहर के पुलिस सिपाहिओं का स्वास्थ्य जागरूकता के प्रति अध्ययन करने का प्रयास किया है। इस अनुसंधानकार्य के लिए शोधकर्ता ने अमरावती शहर के 60 पुलिस सिपाहिओं का परिक्षण लिया। जिनके उपर उनके स्वास्थ्य से संबंधी ज्ञान का परिक्षण लिया गया। ज्यादातर पुलीसकर्मी उच्च रक्त दाब के प्रति जागरूक थे। जैसे 76.66% जागृत तथा 24.34% अजागृत थे। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अमरावती में कार्यरत् पुलिस कर्मचारी उच्च रक्त दाब के प्रति जागरूक है। ज्यादातर पुलिसकर्मी कोलेस्ट्रॉल के प्रति जागरूक है। ज्यादातर पुलिसकर्मी मधुमेह के प्रति जागरूक ह। जैसे 36.66% जागरूक तथा 36.67% अजागरूक थे। अतः यक निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अमरावती में कार्यरत् पुलिस कर्मचारी कोलेस्ट्रॉल के प्रति जागरूक है। ज्यादातर पुलिसकर्मी मधुमेह के प्रति जागरूक है। जैसे 65% जागरूक तथा 35% अजागरूक थे। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अमरावती में कार्यरत् पुलिस कर्मचारी मधुमेह के प्रति जागरूक है। अतः उपरोक्त सारणीयों से यह ज्ञात होता है कि अमरावती शहर के पुलीस सिपाहियों का स्वास्थ्य जागरूकता का स्तर ज्यादा पाया है। अतः अनुसंधानकर्ता द्वारा जो परिकल्पना कि थी वह स्विकृत नही कि जाती है।

निष्कर्ष

प्राप्त ऑकडों के आधार पर विश्लेषण करने के पश्चात् अनुसंधनकर्ता निम्नलिखित निष्कर्ष निकालता है।

- अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि अमरावती में कार्यरत् पुलिस कर्मचारी उच्च रक्त दाब के प्रति जागरूक है।
- अतः यह निष्कर्ष निकाला ला सकता है कि अमरावती मे कार्यरत् पुलिस कर्मचारी कोलेस्ट्रॉल के प्रति जागरूक है।
- अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अमरावती में कार्यरत् पुलिस कर्मचारी मधुमेह के प्रति जागरूक है।

सुझाव

निष्कर्ष के आधार पर अनुसंधानकर्ता निम्नलिखित सुझाव देने का प्रयास करता है।

- ➢ इस तरह का अध्ययन दूसरे शासकीय कर्मचारियों पर किया जा सकता है।
- ➢ इस तरह का अध्ययन व्यवसाईयों पर भी किया जा सकता है।
- ➢ इस तरह का अध्ययन खिलाडियों पर किया जा सकता है।

- इस तरह का अध्ययन अलग–अलग खेलों के खिलाड़ियों पर किया जा सकता है।
- इस तरह का अध्ययन अलग–अलग स्तर के खिलाडियों पर किया जा सकता है।
- इस तरह का अध्ययन प्राध्यापकों पर किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :–

आर्क लिइफ एडवर्ड (1988) "हैल्थ बिहेवियर एण्ड सोसियो इकोनोमिक स्टेटस, ए सर्वे अमंग द अडल्ट पापुलेशन इन नार्वे" डेजटेशन अवस्ट्रैक्टस इन्टरनेशनल, वाल्युम, 48 नं. पृ. 2491 बी.

क्लाक एच. हॅरिसन, (1966) आप्लिकेशन ऑफ मेजरमेन्ट इन हेल्थ ॲण्ड फिजिकल एज्युकेशन, नई दिल्ली : प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया,

कुरैट स्टैन्जी, (1999) "डिफरेन्स बिटविन पार्टीसीपेन्ट ऍण्ड नॉन पार्टीसिपेन्ट इन अ वर्क साईट हॅल्थ प्रमोशन प्रोग्राम" डेझरटेशन ॲबस्टॅक्ट इन्टरनेशनल, वालयुम 50, नं. 8, फरवरी पृ. 3429 बी.

इर्विन लेसली डब्ल्यू एंद बेसली एम. स्टेटोन, (1951) "ए डीटर्मिनेशन ऑफ फन्डामेन्टल कनसैप्ट ऑफ हैल्थफुल लिविंग एंड देयर रीलेटीव इम्पोरटेन्स फॉर जनरल एजुकेशन ऑ द सेकेण्डरी स्कूल लेबल, रिसर्च कर्क्टरली" वाल्यूम नं., पृ. 3–27

जोसेफ मार्टीन जॉन (1988) "द इफेक्ट ऑफ हॅल्थ इनहैन्समेंन्ट प्रोग्राम फॉर स्टॅनफार्ड फ्रॅशमैन ऑन सम सिलेक्टेड मेजर ऑफ हॅल्थ एण्ड फिजिकल फिटनेस" डेझरटेशन ॲबस्ट्रॅक्ट इन्टरनेशनल, वालयुम 48 नं. 10 पृ. 2548 ए.

वीलडे किले ऑन (1990) "रिप्रेजेन्टेशन ऑफ हेल्थ परसनज विद कोरनीक हेल्थ प्रॉब्लेम्स" डेजटेशन अटस्टैक्टस इन्टरनेशनल, वाल्युम, 50 नं. 8 पृ. 3400 बी.

सिंह अजमेर (2004), शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान (कल्याणी पब्लीशर्स,) पृ.क्र. 195

अदीद मोहम्मद मोयद, (1988) "ए सिस्टम व्यु ऑफ हॅल्थ सरवीस इन सउदी अरेबिया अंडर थ्री नेशनल हॅल्थ डेवलपमेन्ट प्लान्स" डेझरटेशन ॲबस्टॅक्ट इन्टरनेशनल, वाल्युम 48, नं. 10, पृ. 2943